परिचयात्मक समष्टि अर्थशास्त्र - प्रश्न पत्र

निर्देश: सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक कोष्ठक में दिए गए हैं।

खंड अ: बहुविकल्पीय प्रश्न (10 अंक)

निम्नलिखित में से कौन सा मुख्य रूप से एक समष्टि अर्थशास्त्र विषय है? (1 अंक)

क) सेब की कीमत

ख) एक फर्म का भर्ती निर्णय

ग) मुद्रास्फीति की दर

घ) अनाज के दो ब्रांडों के बीच उपभोक्ता की पसंद

जीडीपी का मतलब है: (1 अंक)

क) सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product)

ख) महान विकास कार्यक्रम (Great Development Program)

ग) वैश्विक मांग मूल्य (Global Demand Price)

घ) सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product)

परिपत्र प्रवाह मॉडल में, परिवार फर्मों को प्रदान करते हैं: (1 अंक)

क) माल और सेवाएं

ख) उत्पादन के कारक (श्रम, पूंजी, भूमि)

ग) कर

घ) सरकारी नियम

निम्नलिखित में से कौन सा जीडीपी की गणना में शामिल नहीं है? (1 अंक)

क) नई कार की बिक्री

ख) बुनियादी ढांचे पर सरकारी खर्च

ग) एक प्रयुक्त घर की बिक्री

घ) नए उपकरणों में व्यावसायिक निवेश

यदि नाममात्र जीडीपी बढ़ती है जबकि वास्तविक जीडीपी समान रहती है, तो: (1 अंक)

क) कीमतें घट गई हैं।

ख) कीमतें बढ़ गई हैं।

ग) उत्पादन बढ़ गया है।

घ) अर्थव्यवस्था मंदी में है।

बेरोजगारी दर की गणना इस प्रकार की जाती है: (1 अंक)

क) (नियोजितों की संख्या / श्रम बल) * 100

ख) (बेरोजगारों की संख्या / कुल जनसंख्या) * 100

ग) (बेरोजगारों की संख्या / श्रम बल) * 100

घ) (श्रम बल / कुल जनसंख्या) * 100

मुद्रास्फीति एक है: (1 अंक)

क) सामान्य मूल्य स्तर में कमी

ख) सामान्य मूल्य स्तर में वृद्धि

ग) आर्थिक मंदी की अवधि

घ) बेरोजगारी का माप

कुल मांग वक्र निम्नलिखित के बीच संबंध दर्शाता है: (1 अंक)

क) मूल्य स्तर और कुल आपूर्ति

ख) मूल्य स्तर और कुल उत्पादन की मांग की मात्रा

ग) ब्याज दरें और निवेश

घ) सरकारी खर्च और कर की दरें

राजकोषीय नीति से तात्पर्य है: (1 अंक)

क) मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए केंद्रीय बैंक द्वारा की गई कार्रवाइयाँ

ख) सरकारी खर्च और कराधान के बारे में सरकार के निर्णय

ग) व्यवसायों पर नियम

घ) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते

निम्नलिखित में से कौन सा मौद्रिक नीति का उपकरण है? (1 अंक)

क) सरकारी खर्च

ख) कराधान

ग) खुले बाजार के संचालन

घ) वेतन नियंत्रण

खंड ब: लघु उत्तरीय प्रश्न (30 अंक)

नाममात्र जीडीपी और वास्तविक जीडीपी के बीच अंतर बताइए। वास्तविक जीडीपी आर्थिक विकास का बेहतर माप क्यों है? (5 अंक)

जीडीपी की गणना करने के तीन तरीकों का वर्णन कीजिए। (5 अंक)

विभिन्न प्रकार की बेरोजगारी (घर्षण, संरचनात्मक, चक्रीय) की व्याख्या कीजिए। प्रत्येक का एक उदाहरण दीजिए। (6 अंक)

मुद्रास्फीति के मुख्य कारण क्या हैं? मांग-प्रेरित और लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। (6 अंक)

गुणक प्रभाव की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। यह सरकारी खर्च से कैसे संबंधित है? (4 अंक)

धन के कार्य क्या हैं? (4 अंक)

खंड स: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (30 अंक)

क) कुल मांग (एडी) और कुल आपूर्ति (एएस) मॉडल का चित्र बनाएं और समझाएं। (7 अंक)

ख) सरकारी खर्च में वृद्धि अल्पकाल में एडी वक्र और उत्पादन और कीमतों के संतुलन स्तर को कैसे प्रभावित करेगी, समझाइए। (8 अंक)

क) एक केंद्रीय बैंक के कार्यों का वर्णन कीजिए। (7 अंक)

ख) एक केंद्रीय बैंक खुले बाजार के संचालन का उपयोग करके मुद्रा आपूर्ति को कैसे बढ़ा सकता है, समझाइए। ब्याज दरों और कुल मांग पर इस नीति का क्या संभावित प्रभाव है? (8 अंक)

सुझावित उत्तर कुंजी

खंड अ: बहुविकल्पीय उत्तर

ग

क

ख

ग

ख

ग

ख

ख

ख

ग

खंड ब: लघु उत्तरीय उत्तर

नाममात्र जीडीपी वर्तमान मूल्यों पर एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है। वास्तविक जीडीपी स्थिर मूल्यों पर एक अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है (यानी, मुद्रास्फीति के लिए समायोजित)। वास्तविक जीडीपी आर्थिक विकास का एक बेहतर माप है क्योंकि यह वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा में परिवर्तन को दर्शाता है, न कि केवल कीमतों में परिवर्तन को। नाममात्र जीडीपी में वृद्धि सिर्फ मुद्रास्फीति के कारण हो सकती है, न कि वास्तविक वृद्धि उत्पादन के कारण। (5 अंक)

जीडीपी की गणना करने के तीन तरीके हैं:

व्यय दृष्टिकोण: जीडीपी = सी + आई + जी + (एक्स - एम), जहां सी = उपभोग, आई = निवेश, जी = सरकारी खर्च, एक्स = निर्यात और एम = आयात।

आय दृष्टिकोण: जीडीपी = अर्थव्यवस्था में अर्जित सभी आय का योग (मजदूरी, वेतन, लाभ, किराया, ब्याज)।

उत्पादन (मूल्य वर्धित) दृष्टिकोण: अर्थव्यवस्था में सभी उद्योगों में उत्पादन के प्रत्येक चरण में मूल्य वर्धित का योग। मूल्य वर्धित एक फर्म के उत्पादन के मूल्य और इसके मध्यवर्ती आदानों की लागत के बीच का अंतर है। (5 अंक)

घर्षणात्मक बेरोजगारी: श्रमिकों को उनकी कौशल और प्राथमिकताओं से मेल खाने वाली नौकरी खोजने में लगने वाले समय के कारण बेरोजगारी। उदाहरण: हाल ही में कॉलेज स्नातक अपनी पहली नौकरी की तलाश में है।

संरचनात्मक बेरोजगारी: बेरोजगारी जो श्रमिकों के कौशल और नियोक्ताओं द्वारा आवश्यक कौशल के बीच बेमेल के कारण उत्पन्न होती है। उदाहरण: एक कोयला खनिक जो कोयला उद्योग के पतन के कारण अपनी नौकरी खो देता है।

चक्रीय बेरोजगारी: बेरोजगारी जो व्यापार चक्र (मंदी) में गिरावट के कारण होती है। उदाहरण: एक निर्माण श्रमिक जिसे आर्थिक मंदी के दौरान निकाल दिया जाता है। (6 अंक)

मुद्रास्फीति के मुख्य कारण हैं:

मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति: तब होती है जब बहुत कम वस्तुओं का पीछा करते हुए बहुत अधिक धन होता है, जिससे कीमतें बढ़ जाती हैं। यह सरकारी खर्च, उपभोक्ता विश्वास या निर्यात मांग में वृद्धि जैसे कारकों के कारण कुल मांग में वृद्धि के कारण हो सकता है।

लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति: तब होती है जब उत्पादन की लागत बढ़ जाती है (जैसे, मजदूरी, कच्चा माल, ऊर्जा की कीमतें), जिससे फर्में कीमतें बढ़ाती हैं।

मांग-प्रेरित मुद्रास्फीति बढ़ी हुई मांग के कारण होती है, जबकि लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति उत्पादन की बढ़ती लागत के कारण होती है। (6 अंक)

गुणक प्रभाव वह घटना है जिसके द्वारा कुल मांग में प्रारंभिक परिवर्तन (जैसे, सरकारी खर्च) का समग्र उत्पादन और आय पर एक बढ़-चढ़कर प्रभाव पड़ सकता है। गुणक की गणना 1/(1-एमपीसी) के रूप में की जाती है, जहां एमपीसी उपभोग करने की सीमांत प्रवृत्ति है (आय के एक अतिरिक्त डॉलर का वह अंश जो खर्च किया जाता है)। सरकारी खर्च का एक गुणक प्रभाव होता है क्योंकि जब सरकार पैसा खर्च करती है, तो यह किसी और के लिए आय बन जाती है, जो तब उस आय का एक हिस्सा खर्च करता है, जिससे दूसरों के लिए और आय बनती है, और इसी तरह। (4 अंक)

धन के कार्य हैं:

विनिमय का माध्यम: धन का उपयोग लेनदेन को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता है, जिससे वस्तु विनिमय की आवश्यकता से बचा जा सकता है।

लेखा की इकाई: धन वस्तुओं और सेवाओं के लिए मूल्य का एक सामान्य माप प्रदान करता है, जिससे कीमतों की आसानी से तुलना की जा सकती है।

मूल्य का भंडार: धन व्यक्तियों को क्रय शक्ति को वर्तमान से भविष्य में स्थानांतरित करने की अनुमति देता है। (4 अंक)

खंड स: दीर्घ उत्तरीय उत्तर

क) कुल मांग (एडी) वक्र अर्थव्यवस्था में समग्र मूल्य स्तर और कुल उत्पादन की मांग की मात्रा के बीच संबंध दर्शाता है। यह नीचे की ओर ढलान करता है क्योंकि जैसे-जैसे मूल्य स्तर गिरता है, धन की क्रय शक्ति बढ़ती है, ब्याज दरें गिरने लगती हैं (निवेश को प्रोत्साहित करती हैं), और निर्यात अपेक्षाकृत सस्ते हो जाते हैं (शुद्ध निर्यात में वृद्धि होती है)।

कुल आपूर्ति (एएस) वक्र समग्र मूल्य स्तर और आपूर्ति की कुल उत्पादन मात्रा के बीच संबंध दर्शाता है। अल्पकाल में, एएस वक्र ऊपर की ओर ढलान वाला होता है क्योंकि मजदूरी और अन्य इनपुट लागत चिपचिपी होती हैं। जैसे-जैसे मूल्य स्तर बढ़ता है, फर्में अधिक उत्पादन करके लाभ बढ़ा सकती हैं। दीर्घकाल में, एएस वक्र उत्पादन के संभावित स्तर पर लंबवत होता है, यह दर्शाता है कि दीर्घकाल में, उत्पादन संसाधनों और प्रौद्योगिकी की उपलब्धता द्वारा निर्धारित किया जाता है, न कि मूल्य स्तर द्वारा। [उम्मीद है कि आरेख उचित रूप से लेबल किए गए अक्षों, एडी और एसआरएएस वक्र के साथ होगा।] (7 अंक)

ख) सरकारी खर्च में वृद्धि एडी वक्र को दाईं ओर स्थानांतरित कर देगी। अल्पकाल में, इससे उत्पादन के संतुलन स्तर और संतुलन मूल्य स्तर दोनों में वृद्धि होगी। उत्पादन में वृद्धि का परिमाण गुणक प्रभाव के आकार और एएस वक्र की ढलान पर निर्भर करेगा। यदि एएस वक्र अपेक्षाकृत सपाट है, तो उत्पादन में वृद्धि अधिक होगी, और मूल्य स्तर में वृद्धि कम होगी। यदि एएस वक्र अपेक्षाकृत खड़ी है, तो उत्पादन में वृद्धि कम होगी, और मूल्य स्तर में वृद्धि अधिक होगी। (8 अंक)

क) एक केंद्रीय बैंक के कार्यों में शामिल हैं:

मुद्रा जारी करना: देश की मुद्रा को छापना और वितरित करना।

बैंकों के लिए बैंकर के रूप में कार्य करना: बैंकों को भंडार जमा करने और पैसा उधार लेने के लिए एक स्थान प्रदान करना।

अंतिम उपाय के ऋणदाता के रूप में कार्य करना: वित्तीय संकट के समय बैंकों को ऋण प्रदान करना।

मौद्रिक नीति का संचालन करना: आर्थिक स्थिरता और पूर्ण रोजगार को बढ़ावा देने के लिए धन की आपूर्ति और ऋण की शर्तों को नियंत्रित करना।

बैंकों का पर्यवेक्षण और विनियमन करना: बैंकिंग प्रणाली की सुरक्षा और सुदृढ़ता सुनिश्चित करना। (7 अंक)

ख) एक केंद्रीय बैंक खुले बाजार के संचालन के माध्यम से मुद्रा आपूर्ति बढ़ा सकता है, जिसमें वाणिज्यिक बैंकों से सरकारी बांड खरीदना शामिल है। जब केंद्रीय बैंक बांड खरीदता है, तो वह बैंकों के आरक्षित खातों को क्रेडिट करता है। ये बढ़ी हुई आरक्षित राशि बैंकों को अधिक ऋण देने की अनुमति देती है, जिससे मुद्रा आपूर्ति बढ़ जाती है। इस नीति का संभावित प्रभाव ब्याज दरों को कम करना है। अधिक धन उपलब्ध होने के साथ, उधार देने योग्य निधियों की आपूर्ति बढ़ जाती है, जिससे ब्याज दरों पर नीचे की ओर दबाव पड़ता है। कम ब्याज दरें निवेश और उपभोक्ता खर्च को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे कुल मांग में वृद्धि होती है। एडी वक्र दाईं ओर स्थानांतरित हो जाता है, जिससे उच्च उत्पादन और संभावित रूप से उच्च कीमतें होती हैं (एएस वक्र की ढलान के आधार पर)। (8 अंक)